Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

वर्तमान सदी में मध्ययुगीन संत कवियों के चिंतन की प्रासंगिकता

डॉ अर्चना शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)

शोधसारांश– संत काव्य शाश्वत रूप से आज भी यथावत जीवन संदेश सुनाने में समर्थ है। संतों ने संसार के दुख को दूर करने का जो व्रत लिया, उसमें उन्हें आत्म तृप्ति प्राप्त हुई और उससे संसार भर का भी निश्चय ही कल्याण होता रहेगा। संतों का लक्ष्य सत्यान्वेषण की लगन उत्पन्न करना था। संतो ने वाह्यडंबरो कर्मकांडो और संस्कारों पर करारी चोट की है, जो मनुष्य मनुष्य के बीच भेदभाव के खाई खड़ी करते हैं। उन कवियों की वाणी से सामाजिक स्तर पर एक बहुत बड़ा काम हुआ है।

मुख्य शब्द – मध्ययुगीन, संत, कवि, चिंतन, काव्य, जीवन, कल्याण, सामाजिक।

मध्ययुगीन हिंदी संतों का आविर्भाव युग की महत्वपूर्ण देन है। संत कवि एक ऐसे भक्ति मार्ग की स्थापना करना चाहते थे जिसे हिंदू और मुसलमान दोनों अपना सकें। संतों ने अपनी वाणी से पारस्परिक संघर्ष को समाप्त करके परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया और साधारण जनता को अंत:साधना तथा निर्गुण भक्ति का उपदेश दिया। संत कवि किसी भी वाह्य विधान और आडंबरपूर्ण पूजा की अपेक्षा पवित्र नैतिक सात्विक जीवन को अधिक महत्व देते थे। वे अहिंसा, सत्य, दया, प्रेम, संयम आदि संयुक्त धर्म के सामान्य स्वरूप को ही वास्तविक धर्म मानते थे। कबीरदास जी ने गुरु रामानंद जी के अद्वैतवाद से निर्गुण धारा का उदघाटन किया। संत काव्य आज भी यथावत जीवन संदेश सुनाने में समर्थ है। संतो की समत्व भावना प्रगतिशीलता से परिपूर्ण है।जिसके आधार पर संत कवियों ने संकीर्णता को त्याग कर, मानव मात्र के हितार्थ उदार भावनाओं को प्रोत्साहित किया। संत काव्य ज्ञान, भक्ति, कर्म और योग के साधन मार्गों के प्रति समन्वयात्मक दृष्टिकोण लेकर चला है जिसमें कर्मनिष्ठा और आचरण शुद्धि को प्रमुखता दी गई है। संतमत का उद्भव सिद्धो और नाथों की प्राचीन परंपरा से हुआ किंतु नई प्रवृत्तियों का समावेश समाज और साहित्य के लिए कल्याणकारी था। साहित्य में एक नवीन धारा की सृष्टि हुई। यह नवीन धारा संत काव्य के रूप में प्रवाहित हुई।[1] वर्तमान में मध्ययुगीन संत कवियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मध्ययुगीन संतों ने सामाजिक विसंगतियों एवं कुरीतियों के विरुद्ध चेतना को जागृत करने का प्रयास किया। संत कवियों के उपदेशों, मानवतावादी, लोक कल्याणकारी एवं परोपकारी वाणी से जहां तत्कालीन समाज वैचारिक धरातल पर आंदोलित हुआ, वहीं वर्तमान सदी में विसंगतियों एवं तनावों से मुक्ति पाने में भी संत कवियों का चिंतन प्रासंगिक है। मध्ययुगीन संत कवियों का चिंतन वर्तमान सदी के विभिन्न ज्वलंत प्रश्नों का सहजता से समाधान करने हेतु प्रासंगिक है। संत कवि अपने चिंतन से ऊंच–नीच, छुआछूत आदि बंधनों से मुक्ति पाने में जनसामान्य की मदद को आगे आए। अंधविश्वास, अंधभक्ति और हठधर्मिता से दूर कर उन्हें ऊंचे पायदान पर प्रतिष्ठित करना चाहते थे। 'सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया' की उद्घोषणा करने वाले भारतवर्ष में मानव अपने नैतिक मूल्यों से गिर गया तथा मानव प्रेम एवं भाईचारे की न्यूनता से उत्पन्न जीवन में वैषम्य एवं विच्छिन्नता व्याप्त हो गई। इस विकट परिस्थिति से समाज को उबारने के लिए अनेक महापुरुषों एवं समाज सुधारकों ने मानवतावादी आंदोलन का शुभारंभ किया। संतों की दृष्टि में दूसरों के दुखों को दूर करना ही मानवता है। नरसी मेहता ने इसी को वैष्णव धर्म स्वीकार करते हुए कहा है –'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड़ पराई जाणै रे'। इस भजन में वैष्णव जनों के लिए उत्तम आदर्श और वृत्ति क्या हो, इसका वर्णन है। नरसी मेहता ने इसमें वैष्णव धर्म के सारतत्वो

का संकलन करके अपनी अंतर्दृष्टि एवं सहज मानवीयता का परिचय दिया है। सार्वजनिक हित ही हिंदी संत काव्य की विशेषता है। सामाजिक वही है जो सहृदय है, जो संवेदन ग्रहण कर सकता है। भक्त से बढ़कर कोई सामाजिक नहीं हो पाता। उससे बढ़कर किसी में पराई पीर की पहचान नहीं हो सकती। कबीर ने दूसरों की पीड़ा को जानने वाले को ही सच्चा साधु पीर तथा इसके विपरीत आचरण करने वाले को विधर्मी काफिर कहा है–

कबीरा सोई पीर है, जो जाणै पर पीर ।

जो पर पीर ना जाणै, सो काफिर बेपीर।।[2]

कबीर किसी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नहीं करते थे। एक ही सृष्टा के रचने के कारण कबीर बाहरी भेदभावों को अमान्य कर सबको समान मानते थे। कबीर कहते हैं–

हिंदू तुरक का साहिब एक।

कह करै मुल्ला, कह करै सेख।।[3]

एक बूंद एकै मल मूतर, एक चांम, एक गूदा।

एकजोति थै सब उत्पना, कौन बाम्हन कौन सूदा।।[4]

निर्धन सरधनु दोनउ भाई। प्रभु की कला न मेटी जाई।

कह कबीर निर्धन है सोई जाके हिरदै नामु न होई।।[5]

कबीर ने समाज में प्रचलित भेदभाव को नकार कर सबकी समानता की घोषणा इसी आधार पर की थी कि एक ही सृष्टा ने सबको रचा है, अत: सब आपस में भाई–भाई हैं, सब समान हैं। मनुष्य मात्र समान है। जाति धर्म का कोई भेद नहीं। कबीर समाज के प्रत्येक क्षेत्र की प्रचलित पारंपरिक रूढ़ियों, मान्यताओं, विकृतियों विडंबनाओं तथा मूल्य हीनताओं का सशक्त एवं प्रभावी शैली में खंडन तथा विघटन करते हुए स्वानुभूत सत्य की कसौटी प्रस्तुत करके आत्मविश्वास, स्वतंत्रता, समानता और विश्व बंधुत्व का संदेश देते हुए कहते हैं–

कबिरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर।

ना काहू की दोस्ती, ना काहू से बैर।।[6]

कबीर दार्शनिक दृष्टा है, क्रांतिकारी समाज के निर्माता हैं, कबीर ने अपने पदों में हिंदू औरमुसलमानों द्वारा वाह्याचार को महत्व देने की तीव्र आलोचना की है।

संत रैदास ने वाह्यडम्बरो का विरोध किया है। अहिंसा को रैदास ने सार्वभौम सिद्धांत कहा है तथा इसकी आवश्यकता का समर्थन किया है–

रविदास जीव कूं मारिकर कैसो मिलहि खुदाय।

पीर पैगंबर औलिया कोई न कहै समझाएं।।[7]

रैदास समतामूलक समाज की स्थापना चाहते थे। रैदास ने अपने ज्ञान से समाज में वैचारिक क्रांति पैदा की। समाज से बुराइयों को जड़ से समाप्त करने में उनके चिंतन का अविस्मरणीय योगदान है। संत रविदास ने अपनी वाणी एवं सदुपदेशों से समाज में एक नई चेतना का संचार कर पाखंड छोड़कर सच्चाई के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। रविदास की वाणी आज के भौतिकवाद से संतप्त संसार को सुख और शांति प्रदान करने में पूर्ण रूप में सक्षम है।[8] संत रविदास ने पूजा–पाठ, तीर्थ स्थान आदि अनेक प्रकार के धार्मिक कार्यों के स्थान पर मन की शुद्धता पर बल देते हुए कहा है–'मन चंगा तो कठौती में गंगा' उनकी यह उक्ति आज भी चरितार्थ है और व्यक्ति को दुख रहित होने का मूल मंत्र है। रविदास जी ने अपने आचरण और व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर छोटा या बड़ा नहीं होता, विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद् व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में समर्थ होते हैं। वे कहते हैं–

जाति-जाति में जाति हैं, जो केतन के पात।

रैदास मनुष्य न जुड़ सके, जब तक जाति न जात।।[9]

वर्तमान सदी में संत रविदास का चिंतन प्रासंगिक है। प्राणी मात्र को सुखी करने के लिए संसार भर के सारे दुख तथा कष्ट और दरिद्रता को अपने सिर पर ले लेना ही सच्ची मनुष्यता है, इसी भावना को ग्रहण करने वाला सच्चा संत हो सकता है। सुप्रसिद्ध संत कवि मलूक दास ऐसे ही सच्चे संत हैं। संत मलूक दास सब धर्मों का सार अहिंसा ही मानते हैं। साधक दया, धर्म की आराधना से ही भव से पार हो सकता है। अहिंसा के बिना सभी क्रियाएं एवं तीर्थ यात्राएं निष्फल हैं–

दया धर्म हिरदै बसै, बोलै अमृत बैन।

मक्का मदिना द्वारका, बद्री और केदार।

बिन दया सब झूठ है, कहै मलूक विचार।[10]

मलूक दास के अनुसार ईश्वर गर्व प्रहारी है, मनुष्यों को गर्व नहीं करना चाहिए। हमें दया और दीनता को ग्रहण कर परद्राह से बचना चाहिए।[11] संत मलूक दास सिद्ध संत थे। उनके चित्त में विश्व कल्याण की भावना समाई हुई थी। वे हिंदू मुस्लिम एकता के प्रतीक थे।

संत काव्य धारा में संत दादू दयाल का गौरवपूर्ण स्थान है । संत दादू दयाल ने सभी ज्ञानियों की एक जाति मानते हुए कहा है–

जे पहुंचे, ते कहि गए, तिनकी एकैबात।

सबै सयाने एक मत, तिन की एकै जात।।[12]

डॉ रामकुमार वर्मा के अनुसार – दादू दयाल के सिद्धांत कबीर के सिद्धांतों से मिलते हुए भी अपनी विशेषता रखते हैं।[13] संत दादू ने अपनी वाणियों में नामदेव, पीपा, रैदास आदि संतों को अति सम्माननीय ढंग से याद किया है–

नामदेव कबीर जुलाहो, जन रैदास तिरै।

दादू बेगि बार नहिं लागै हरि सौ सबै सरै।।[14]

संत दादू का आत्मानुभव ही उनकी वाणी है। डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – अपने जीवन काल में ही वे इतने प्रख्यात हुए थे कि सम्राट अकबर ने उन्हें सीकरी में बुलाकर 40 दिन तक निरंतर सत्संग किया था।[15] संत कवि दादू दयाल एक महान साधक एवं उच्च कोटि के विचारक थे। यह ऐसे संत थे जिसने विष को अमृत, आग को पानी, अपूर्ण को पूर्ण, तिक्त को मधुर, शत्रु को मित्र, मलिन को निर्मल बना लिया था।

मानवतावादी दादू दयाल ने किसी के भी प्रति द्वेष भावना न रखने की प्रेरणा देते हुए कहा है–

किस सौ बैरी ह्वै रह्या, दूजा कोई नाहि।

जिसके अंग थैं ऊपज्या, सोई है सब माहि।।[16]

संत मलूक दास जी की मानवतावादी भावना का प्रसार तो जड़– चेतन एवं वनस्पति जगत में भी समान रूप से हुआ है, उनका कथन है–

हरि डार न तोड़ियो, लागै छूरा बान।

दास मलूका यौं कहें, अपना- सा जिव जान।।[17]

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने संत शब्द की व्याख्या करते हुए उसे पांच अर्थों में प्रयुक्त हुआ बताया है – बुद्धिमान, पवित्रात्मका, सज्जन, परोपकारी और सदाचारी, आदि। धम्मपद के अंतर्गत संत शब्द का प्रयोग शांत प्रकृति के व्यक्ति के अर्थ में हुआ है। अंग्रेजी का सेंट शब्द भी हिंदी के संत शब्द से मिलता–जुलता है ।[18] संत शब्द संस्कृत के सत् शब्द का वाचक है।[19] आचार्य चतुर्वेदी ने संत शब्द की उत्पत्ति के संबंध में जो तथ्य प्रस्तुत किए हैं और ऋग्वेद पाहुड़ दोहा, तैत्तिरीय उपनिषद् आदि से जो प्रमाण दिये हैं, उनसे स्पष्ट हो जाता है, कि जो व्यक्ति सतरूपी परमतत्व का साक्षात्कार कर चुका हो

अथवा अखंड सत्य में प्रतिष्ठित हो गया हो, वही संत है।[20] सत से अभिप्राय है अस्तित्व, साधुता, परमतत्व ब्रह्म निष्ठा, सहृदयता भाव, निष्काम कर्म आदि । इस प्रकार सत का साक्षात एवं आचरण करने वाले व्यक्ति को संत कहा जाने लगा।
संत धरनीदास ने भी मानव- मानव में अभेद का प्रतिपादन करते हुए सबके हृदय में उसी एक परमात्मा का निवास माना है। वे कहते हैं कि जब कोई गैर या बेगाना है ही नहीं, तो फिर किसे आशीर्वाद से शीतल तथा किसी अभिशाप से संतप्त किया जाए-

धरनी काहि असीमिये, दीजै काहि सराय ।

दूजा कतहुं न देखिये, सब घट आपै आप।।[21]

संत गुरु नानक के आविर्भाव से अज्ञानता का अंधकार समाप्त हो गया और संसार ज्ञान के प्रकाश में प्रकाशित हो गया-

सतगुरु नानक प्रगटिया, मिटी धुंध जग चानन होआ ।

जिउ कर सूरज निकलिओ, तार छिपे अंधकार पलोआ [22]।।

उन्होंने मानव कल्याण की ओर शिष्यों को प्रेरित किया । वास्तव में गुरु नानक त्याग, सदाचार, परोपकार, मानवता, धार्मिकता आदि उत्कृष्ट गुणों की साक्षात मूर्ति थे। वे उन महात्माओं में से थे जिन्हें हम किसी देश, जाति अथवा धर्म का नहीं बता सकते। समस्त संसार का कल्याण उनका ध्येय था।[23] गुरु नानक एक धर्मपरायण एवं मानवतावादी विचारधारा से सम्पन्न एक उच्च कोटि के संत थे। उनके द्वारा जो भी पद लिखा गया वह सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय एकता और मानवता की प्रेरणा देता है। गुरु नानक देव ने बाह्य आडंबरों और कर्मकांडो को छोड़कर यथार्थ को अपनाने का उपदेश दिया है। नानक देव जी की वाणी का मुख्य स्वर अध्यात्म और सामाजिक परोपकार की भावना है। नानक देव में पैगंबर, दार्शनिक, राजयोगी, भगवत भक्ति ब्रह्म ज्ञानी, गृहस्थ, त्यागी, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, कवि, संगीतज्ञ, देशभक्त प्रकृति प्रेमी दिनों के मसीहा विश्व बंधु मानव प्रेमी सभी के गुण मूर्तिमान होकर एक साथ विद्यमान थे[24]। गुरु नानक ने सच्ची भक्ति भावना ,चारित्रिकता और आत्मबल का ही उपदेश दिया जिससे संपूर्ण जाति में निर्भीकता और कर्तव्य परायणता जगा गई। मध्यकालीन हिंदी संत कवि दूलन दास ने भी मानवतावादी भावना से अनुप्राणित होकर छोटे बड़े तथा हिंदू मुसलमान आदि भावनाओं की अपेक्षा उसे ही बड़ा माना है जो गरीबों तथा भूखों को भोजन देता है उनका कथन है-

दूलन छोटे वै बड़े, मुसलमान का हिंदू।

भूखे देवै भौरिया, सबै गुरु गोविंदु।।[25]

संत कवि पलटू साहब मानव समाज में व्याप्त अनीति तथा कपट पूर्ण आचरण को देखकर अत्यंत दुखी होते हैं। उनका यह दुख उनकी मानवतावादी विचारधारा की आधार भूमि ही है। पलटू साहब की व्यथा का रूप यह है-

पलटू मैं रोवन लगा, जरौ जगत की रीति।

ऊंह देखौ तंह कपट है, का सौं कीजै प्रीति।।

मुंह मीठो भीतर कपट, तहां न मेरो बास।

काहू से दिल ना मिलै, पलटू फिरै उदास[26]।।

अन्य संतों की तरह वाह्यडंबरो का इन्होंने विरोध किया है। विलासी महन्तो और पाखंडी सन्यासियों की उन्होंने खुलकर निंदा की। पलटू साहब एक निर्भीक स्पष्ट वक्ता समालोचक निर्गुण पंथी तथा निस्पृह संत थे।
संत सुंदरदास अद्भुत प्रतिभा संपन्न कवि थे। उनकी वाणी बड़े-बड़े महात्माओं की भांति प्रेम, वैराग्य, गुरु भक्ति और अनुभव ज्ञान में पगी हुई है, चाहे उसे महाकाव्य कहो, चाहे बड़े योगाभ्यासी का सत्य निरूपण, चाहे एक शिरोमणि की वाणी, वह भारतवर्ष के साहित्य भंडार में अनमोल रत्न हैं।[27] सुंदर दास जी की अनुभूति साधु तथा अभिव्यक्ति सधी हुई है। भक्ति, ज्ञान, नीति, देशाचार आदि पर इन्होंने सुंदर पद कहे हैं इसीलिए कहा जाता है कि संत कवियों में काव्य की प्रौढ़ता यदि

देखनी हो तो सुंदर दास के काव्य का पारायण करना चाहिए।[28] वास्तव में सुंदर दास एक उच्च कोटि के विद्वान थे। इसीलिए राघवदास में भक्तमाल में इन्हें दूसरा शंकराचार्य बताया है–

शंकराचारय दूसरौ, दादू के सुंदर भयो।[29]

संत सुंदरदास का मत है कि मन, वचन और कर्म से किसी जीव को न सताना अहिंसा है–

मन करि दोष न कीजिये वचन न लावै कर्म।

घात न करिये देह सौं, यहै अहिंसा धर्म।।[30]

सुंदर दास के अनुसार किसी चीज को चुराना ही चोरी नहीं है बल्कि मानसिक विकार दम्भ, कपट, छल, द्वंद, मिथ्या, पाप, वासना आदि भी चोरी के अंतर्गत माने जाते हैं।

संत काव्य शाश्वत रूप से आज भी यथावत जीवन संदेश सुनाने में समर्थ है। संतों ने संसार के दुख को दूर करने का जो व्रत लिया, उसमें उन्हें आत्म तृप्ति प्राप्त हुई और उससे संसार भर का भी निश्चय ही कल्याण होता रहेगा। संतों का लक्ष्य सत्यान्वेषण की लगन उत्पन्न करना था। संतो ने वाह्यडंबरो कर्मकांडो और संस्कारों पर करारी चोट की है, जो मनुष्य मनुष्य के बीच भेदभाव के खाई खड़ी करते हैं। उन कवियों की वाणी से सामाजिक स्तर पर एक बहुत बड़ा काम हुआ है। संतो के विचार समाज कल्याण के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुए। संतों ने हिंदू एवं इस्लाम धर्मों में विद्यमान आडंबरो एवं रूढियों का विरोध करते हुए मानव धर्म की स्थापना पर बल दिया। तीर्थाटन, मूर्ति पूजा, मिथ्याचार की अपेक्षा इन संतों ने संतोष, संयम, धैर्य, दया, क्षमा, परोपकार, निर्भयता, उदारता, सहनशीलता एवं सदाचार पर बल दिया। धार्मिक समन्वय एवं मानवीय गुणों को ही धर्म की संज्ञा दी। संतो की वैचारिक संवेदन किसी भी मनुष्य की व्यक्ति सत्ता को महत्वपूर्ण मानती हैं। आज जब हम चारों ओर व्याप्त सामाजिक जड़ता तथा अराजकता की ओर उन्मुख होते हैं, तब व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद करने के लिए युगपुरुष की आवश्यकता महसूस करते हैं ऐसे में संतों का कालजई व्यक्तित्व इस समय वर्तमान सदी में हमारे लिए ज्योतिपुंज की तरह दिखाई देता है। संतो ने अपनी वाणी से तत्कालीन रूढ़िगत जड़ता को खत्म करने की मुहिम चलाई जो कि आज भी कहीं ना कहीं अपनी मौजूदगी का एहसास करवाए बिना नहीं रहती। वर्तमान सदी में संत काव्य के चिंतन की प्रासंगिकता पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है ।

संदर्भ–

1. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ रामकुमार वर्मा पृ.193
2. कबीर ग्रंथावली– चाणक कौ अंग, संपादक –श्यामसुंदर दास, पृ.38
3. संत कबीर–राग भैरव 4/3
4. कबीर ग्रंथावली– राग गौड़ी 57/3–4
5. संत कबीर– राग भैरउ 8/3–4
6. कबीर ग्रंथावली–चाणक कौ अंग, संपादक– श्यामसुंदर दास पृ.38
7. रविदास दर्शन –साखी ,182
8. संत रविदास– विचारक और कवि, डॉ. पदम गुरुचरण सिंह, पृ.32
9. रविदास– साखी, 192
10. मलूक दास जी की वाणी, 33
11. मलूक दास जी की वाणी, 27
12. दादू दयाल की वाणी, 490
13. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ रामकुमार वर्मा, पृ. 273
14. दादू दयाल की वाणी,492
15. हिंदी साहित्य –डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.143

16. दादू दयाल की वाणी, 492
17. मलूक दास जी की वाणी, 35
18. उत्तरी भारत की संत परंपरा– आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पृ.2
19. हिंदी संत काव्य में परंपरा और प्रयोग– डॉ. भगवान देव पांडे, पृ.15
20. ऋग्वेद, 2,3 ,23 ,6
21. धरनी दास जी की वाणी, 4
22.गुरु नानक –व्यक्तित्व, विचार–– डॉ. सीता हांडा पृ.7,8
23. हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय –डॉ. पीतांबर वड़थ्वाल, पृ.113
24. गुरु नानक और उनका काव्य, संपादक– महीप सिंह, नरेंद्र सिंह, पृ.48
25. दूलन दास की वाणी, 28
26. पलटू साहब की बानी,156
27. सुंदर बिलास– डॉ. किशोरी लाल गुप्त, पृ. 30
28.काव्यशास्त्र तथा हिंदी साहित्य अनुशीलन– डॉ विष्णु शर्मा इंदु, पृ.167
29. सुंदर बिलास– डॉ. किशोरी लाल गुप्त, पृ.11
30.सुंदर ग्रंथावली –पुरोहित हरनारायण, भाग 1, पृ.33